ISSN: 2393-8900 IMPACT FACTOR : 2.7825(UIF) VOLUME - 7 | ISSUE - 11 | JULY - 2021

HISTORICITY RESEARCH JOURNAL

ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानी 'गोहत्या' में चित्रित मनुवादी विचार

प्रा. डॉ. सतीश अर्जुन घोरपडे
अध्यक्ष हिंदी विभाग , माऊली महाविद्धालय वडाळा,
तहसील – उत्तर सोलापूर.

स्वतंत्र भारत में संविधानिक रूप से सभी भारतीय नागरिकों को समान अधिकार प्राप्त है । गांव से लेकर शहर तक सामाजिक समता, न्याय, बंधुता तथा स्वतंत्रता का परचम लहराकर संविधान निर्माता डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ने भारत के विभिन्न धर्म तथा जातिगत समुदाय को समान दर्जा देकर सदीयों की विषमता नष्ट कर दी । एक नए सूरज की रोशनी में भारतीय समाज जगमगा उठा । अपनी – अपनी योग्यता के अनुसार हमें जीवन यापन करने के अवसर प्राप्त हुए । शिक्षा ने सदीयों से शोषित समाज को अपने अधिकारों के प्रति प्रतिबध्द करवाया । अपने अनुभवों को अभिव्यक्त करने की स्वतंत्रता प्राप्त हुई । इन प्राप्त अधिकारों के चलते शोषित समाज अपनी पीडा एवं त्रासदी को साहित्य के माध्यम से अभिव्यक्त करने लगा है ।

उपयुक्त मान्यताओं के आधार पर भले ही हमें सबकुछ अच्छा दिखाई देता है किंतु आज भी कई स्थानों – क्षेत्रों में मनुवाद जीवित है । इसी मनुवाद पर चोट करते हुए अंबेडकरवादी चिंतक विद्रोहात्मक भावना से ओतप्रोत है । क्रांति की इस ज्वाला को किस प्रकार अंधश्रध्दात्मक पध्दति से उखाड फेंकने का कार्य मनुवादी ताकतों व्दारा चल रहा है इसे अभिव्यक्त करते हुए अंबेडकरवादी साहित्यकार ओमप्रकाश वाल्मीकि गोहत्या कहानी के माध्यम से वास्तववादी चित्रण करते है ।

ओमप्रकाश वाल्मीकि व्दारा रचित सलाम काहानी संग्रह में संकलित 'गोहत्या' एक ऐसी कहानी है जिसमें दलित – शोषितों पर सवर्ण लोग किस प्रकार अन्याय अत्याचार करतें है , इसका वास्तवदर्शी चित्रण हुआ है । सवर्ण समाज दलितों को दबाकर रखने के लिए हमेशा कोई ना कोई बहाना जरूर ढूंढता रहता है तथा दैववाद का हवाला देकर हमेशा इस समाज का शोषण किया जाता है । यह शोषित वर्ग भी इसे अपना नसीब मानकर खामोश रहता है । वह विद्रोह करना चाहे तो शोषकों व्दारा उसकी आवाज दबाई जाती है । ऐसी घटनाओं की पोलखोल करती हुई प्रस्तुत ' गोहत्या ' कहानी हमारे संविधानिक अधिकारों पर ही प्रश्नचिन्ह उपस्थित करती है ।

'गोहत्या' कहानी में गांव के मुखिया बलदेव सिंह की गाय एक दिन अचानक मरं जाना गांव की ठहरी हुई जिदंगी में एक हल – चल के समान था । मुखिया जी का चेहरा गुस्से से लाल हो चुका था । पंडित रामसरण ने जैसे ही गाय की खबर सुनी वह हवेली की ओर भागा । वहां अवसर की नब्ज पहचानकर नाटकीय दंग से आँखों में आंसु भर दिये ओर मुखिया के दु:ख में शामील हो गया । गाय की मत्यु को उसने गोहत्या जैसे अपराध का रंग चढा दिया । मुखियां भी इसे गोहत्या मानकर गांव के

दलितों को ही जिम्मेदार मानने लगे । किसी ने जंगली सुअर मारने के लिए आरे में बारूद लपेटकर रखा था, किंतु गाय ने उसे धोके में उठा लिया और बम का गोला मुँह में ही फट गया जिससे गाय वहीं मर गयी । दोशी के रूप में मुखिया को सुक्का याद आया जो बचपन से ही मुखिया का नौकर था ।

गोहत्या कहानी का नायक सुक्का है, जो कि शोषित – पीडित मजदुर है । वह कई सालों से मुखिया का नौकर था । जो खेत – खलिहान तथा घर बहार के सभी काम पूरी तन्मयता के साथ करता था । उसने कभी किसी बात का विरोध नहीं किया किंतु दो माह पहलें उसका विवाह हुआ । तब से उसमें काफी बदलाव आया । पत्नी के आते ही उसने सुक्का के सोये आत्मविश्वास को जगा दिया । तब से उसे मुखिया क्रूर तथा घृनित दिखाई देने लगा । डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर के अनुसार ' गुलाम को उसकी गुलामी का एहसास दिला दो, तो वह स्वयं उसके विरोध में विद्रोह करेगा ' इस तथ्य को प्रस्तुत करते हुए सुक्का परंपरा का विरोध कर अपनी पत्नी को हवेली भेजने से मना करते हुए शब्दों को मुंह में चबाते हुए विद्रोही स्वर में कहता है कि : ' वह हवेली नहीं आएगी ।' यह सुनकर मुखिया अधिक क्रोधित होकर सुक्का से कहता है कि औकात में रह सुक्का, उडने की कोशीश ना कर बाप दादों से चली आई रीत है । सुक्का इस बात से बिल्कुल भी नहीं डरता क्यों कि वह विद्रोही की ताकत जान गया था । उसने साहस को समेटते हुए कहा कि मुखिया जी काम करता हूँ तो दो मुठ्ठी चावल देते हो, वह हवेली नही आएगी । यह कहकर सुक्का बाहर चला जाता है । मुखिया इसे अपना अपमान समझने लगे और उनके भीतर प्रतिशोध की भावना जागृत हुई ।

गाय मरने के बाद अगले दिन पंचायत बुलाई जाती है । गोहत्या का मामला निपटाने के लिए मुखिया सरपंच, पंचायत के सभी सदस्य के साथ- साथ पूरा गांव इकठ्ठा हो जाता है । ब्राहमन, राजपूत तथा पंचायत के सभी सदस्य मंदीर के चबुतरे पर बैठते है । चमार, मेहतर, नाई, धोबी, कहार तात्पर्य सभी दलित एव निम्न जाति के लोंग चबुतरे के नीचे बैठते है । मुखिया मरी गाय को न्याय दिलाने हेतु पंचों से अपराधी को सजा देने की मांग करता है । पास बैठा पंडीत रामसरण भी मुखिया का समर्थन करते हुए गाय के हत्यारे को कडी सजा की मांग करता है । इसे गोहत्या का महापाप बताकर पूरे गांव को प्रायश्चित करने की बात कहकर आग में घी डालने का काम करता है । पंचो व्दारा मुखिया को पुछने पर वह बलेसर, रघ्घू, जोखू, चिमडा और सुक्का इन पांच दलित युवकों कें नाम बताता है कि इनपर उसे शक है । वे सभी युवक गिडगिडाने लगते है, सफाई देने लगते है कि यह गोहत्या का महापाप हमने नही किया है ।

अंत मे पंच एक तरकीब निकालते है कि इन पांच युवाओं के नाम अलग – अलग चिठ्ठी पर लिखकर एक लोटे में रखी जाती है और पंडीत रामसरण से कहकर एक चिठ्ठी उठाने को कहा जाता है । पंडीत गायत्री मंत्र का जाप करता हुआ एक चिठ्ठी उठाता है । पंचों के साथ – साथ पूरा गांव चिठ्ठी नर लिखा नाम जानने के लिए उत्सुक होता है । पंडीत जैसे ही सुक्का पढता है । अपना नाम सुनते ही सुक्का कांप उठता है, विद्रोह के प्रति जो आत्मविश्वास उसके मन में जाग उठा था, वह बिखर जाता है । गिडगिडाकर न्याय की मांग करता है किंतु कोई भी उसकी ओर ध्यान नहीं देता । वह अपनी ओर से काफी सफाई देता है किंतु निफल है । बाकी युवक इस बात से खुश थे कि बच गये किंतु सुक्का के फंस जाने से नाराज भी थे । वे अच्छी तरह से जानते थे कि सुक्का ने कभी किसी का बुरा नहीं किया, फिर वह गोहत्या क्यों करेगा किंतु पंचायत का विरोध करने का सामर्थ्य उनमें नही था ।

पंचों में अपराधी को क्या दंड दिया जाये इसपर चर्चा होने लगती है । अंत में दंड सुनाया जाता है कि हल में काम आनेवाली लोहे की फाल को आग में तपाकर उसे दोनों हाथों में थामकर सुक्का गौमाता कहता हुआ दस कदम चलेगा । यदि वह निर्दोश है तो गर्म लोहे की फाल उसका कुछ नही बिगाड सकेगी । इसके लिए सीता की अग्नीपरीक्षा का प्रमाण दिया जाता

है । पंडीत रामसरण भी इसका समर्थन करते हुए इस फैसले को धर्म सम्मत बताता है । इसे सुनकर सुक्का का चेहरा निर्जीव हो जाता है । अंधश्रध्दा के माध्यम से दलितों पर किस प्रकार अन्याय किया जाता है । इस बात को कहानीकार यहां स्पष्ट करता है ।

इस बात से मुखिया अंदर ही अंदर बहुत खुश होता है । सुक्का को लगा जैसे वह कह रहा है, ' देख लिया बच्चु, हमसे उलझने का अंजाम ।' सुक्का ने काफी विरोध किया किंतु पंचायत के आगे उसकी एक ना चली । आग जलाई गयी और जुम्मन लुहार व्दारा फाल को तपाया गया । उसने अब तक लोहे को ऑच में तपाकर मनचाहा आकार दिया था किंतु आज लोहे की फाल को तपाकर सुक्का के हाथों में रखना था । सुक्का मुखिया की साजीश पर सोचना चाहता था किंतु आज उसकी सोच टूटकर बिखर गयी थी । जो विश्वास पत्नी ने उसकी रगों में जगाया था, आज वह भी डगमगाने लगा । सुक्का को जबरदस्ती पकडकर आग के पास लाया जाता है । लोग भी एक – दूसरे को धक्का देते हुए आगे जाकर गौ हत्यारे को करीब मरता देखना चाहते थे । लाल दहकती फाल जबरदस्ती से सुक्का के हाथों पर रख दी गयी जिससे सुक्का की एक दर्दभरी चिख निकली जो गांव कि गलियों कच्चे – पक्के मकानों से टकराकर वातावरण तक को दहला गयी । ऐसे चिख सुनकर मरी गाय भी उठकर भाग जाय । भीड में एक खामोशी भर गयी जैसी शमशान भूमी में होती है । पंडीत रामसरण ने भी संतोष की सांस ली जैसे पूरा गांव गोहत्या के पाप से मुक्त हो गया ।

निष्कर्ष रूप से 'गोहत्या' कहानी एक ऐसे दलित युवक की कहानी है जो आत्मविश्वास के साथ सदीयों से चली आ रही घषित परंपराओं का विद्रोह करता है किंतु हमारी मनुवादी मानसिकता ऐसे युवकों को पाप – पुण्य तथा अंधश्रध्दा, धार्मिक दंभ आदि मे उलझाकर हमेशा दंड देते आये है जिसके चलते विद्रोह की ज्वाला को मिटाया जाता है

- **संदर्भ**

1. सलाम – ओमप्रकाश वाल्मीकी
2. अपेक्षा – जून २०१४